भजन

प्रीतम आये रे संग सखियां लाये रे, जहां जमुना जी के घाट रे

करे राज झीलना झीलना, करे राज झीलना---

सात है घाट मध्य पाट घाट, नंग नूर से जड़ित किनार रे

करे राज----

1 कल-कल करती जमुना जी प्रगटी श्री पुखराज से

फिर आकर समाई होजकौसर आई रे दक्षिण दिशा में

उज्जवल धार,खुशबू -ए-अपार ,ठंडी ठंडी मस्त बहार रे

करे राज झीलना---

2 लम्बी -लम्बी डालियां फूलों भरी जल उतरी

पिया संग झूलों में ,झूले सखी उछररंग भरी

जल में भी कभी ,तन नहीं भीगे कभी झीलन सुख अपार है

करे राज झीलना--

3 जब पाट के घाट पर झीलन लीला करते पिया

जल क्रीड़ा करके मोहोलों में सिनगार किया

करते विहार पिया, रूहों से अपार ,आरोग रहे कर प्यार रे

करें राज झीलना --------